आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार-पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक -प्रतिदिन

# मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2580 • उदयपुर, सोमवार 17 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

## आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

## पटना (बिहार), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 व 3 जनवरी 2022 को भारत विकास विकलांग एवं संजय आंनद फाउण्डेशन अन्तर्राज्यीय बस स्टैण्ड के पास पटना में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता भारत विकास विकालांग न्याय एवं संजय आनंद फाउण्डेशन रहा। शिविर में 446 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 187, केलीपर माप 07 व 38 का ऑपरेशन हेतु चयन हुआ।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री नंदकिशोर जी यादव (विधायक महोदय, पटना), अध्यक्षता श्री डॉ.एस.एस. झॉ (पूर्व निःशक्ता आयुक्त), विशिष्ट अतिथि डॉ शिवाजी कुमार जी, डॉ. विमल जी जैन (महामंत्री भारत विकास परिषद), डॉ. अंकित कुमार सिन्हा निर्देशन में केलीपर्स माप टीम श्री पंकज जी (पीएनडो), श्री नरेश जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्त्व, श्री मनीष जी हिण्डोनीया (सहायक), श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर), श्री कपील जी व्यास (सहायक), श्री संदीप





## कैथल (हरियाणा), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश-विदेश में समय समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 व 3 जनवरी 2022 को हनुमान वाटीका करनाल रोड, कैथल में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता नारायण सेवा संस्थान शाखा कैथल रहा। शिविर में 625 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 99, केलीपर माप 44, ऑपरेशन चयन 169 की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री प्रो. एलएम बिदलिश जी (प्राचार्य आरकेएसडी कॉलेज), अध्यक्षता श्री अनिल जी बिघान (तहसीलदार), विशिष्ट अतिथि श्री विवेक जी गर्ग (शाखा संयोजक कैथल), श्री सतपाल जी मंगला (शाखा संरक्षक), श्री राजेश जी गर्ग,श्री दुर्गाप्रसाद जी, श्री साहिल जी, श्री रामप्रताप जी, डॉ. देवेन्द्र जी (सदस्य), डॉ. राकेश जी बिकासी (ऑर्थोपेडिक सर्जन) केलीपर्स माप टीम श्रीमती चित्रा जी (पीएनडो), श्री नाथूसिंह जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी श्री बहादुर सिंह जी (सहायक), श्री अनिल जी (विडियोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity




आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 23 जनवरी 2022 प्रातः 10.00 बजे से

श्री लोकमान्य तिलक कम्यूनिटी हॉल, तिलक नगर, इन्दौर, मध्यप्रदेश

अग्रवाल भवन, महाराजा अग्रसेनभवन, गांधी रोड, रेलवे स्टेशन रोड, देहरादून

सैनी धर्मशाला, सर्या मोहल्ला, जाजर रोड, रोहतक, हरियाणा

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।




www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
+91 7023509999
+91 2946622222

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity




विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ - पांव) माप शिविर
रविवार 23 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

फ्लोरेंस फिजियोथैरेपी एवं वैलनेस क्लिनिक बदलापुर पड़ाव जोनपुर, उ.प्र.

रुपाली डेवलपर्स प्रा. लि. काली चौरा, रैदापुर, आजमगढ़, उ.प्र.

चैन्नई, तमिलनाडू

कल्याण मण्डप, मेन रोड, सिमलीगुडा, उड़ीसा

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।





+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

## धैर्य की असली परीक्षा

एक बार स्वामी विवेकानंद ट्रेन से सफर कर रहे थे। वे फर्स्ट क्लास के डिब्बे में बैठे हुए थे। उनके पास ही दो अंग्रेज और आकर बैठ गए। अंग्रेजों ने विवेकानंद को देखा तो सोचा कि एक साधु इस डिब्बे में कैसे बैठ सकता है। अंग्रेज सोच रहे थे कि ये साधु है, ज्यादा पढ़ा–लिखा नहीं होगा। हमारी भाषा भी नहीं जानता होगा। दोनों अंग्रेज अपनी भाषा में साधु–संतों की बुराई करने लगे। वे बोल रहे थे, ये जो लोग साधु बन जाते हैं, दूसरों के पैसों पर फर्स्ट क्लास के डिब्बे में घूमते हैं, ये लोग धरती पर बोझ हैं। वे लगातार साधुओं की बुराई कर रहे थे, क्योंकि वे ये मान रहे थे कि ये साधु हमारी बात समझ नहीं पा रहा है, इसे इंग्लिश तो आती नहीं होगी। एक स्टेशन पर रेलगाड़ी रुकी तो वहां गार्ड आया तो विवेकानंदजी ने उस गार्ड से अंग्रेजी में कोई बात की। ये देखकर दोनों अंग्रेज हैरान थे, उन्हें लगा कि यह तो फर्राटेदार इंग्लिश बोल रहा है। उन्हें शर्मिंदगी होने लगी।

दोनों अंग्रेजों को ये मालूम हो गया कि ये स्वामी विवेकानंद हैं। दोनों ने स्वामीजी से क्षमा मांगी और पूछा, आप अंग्रेजी भाषा जानते हैं, हम लगातार आपकी बुराई कर रहे थे तो आपने हमें कुछ बोला नहीं। ऐसा क्यों? स्वामीजी ने कहा, आप जैसे लोगों के संपर्क में रहते हुए उनकी भाषा सुनते हुए, उनकी प्रतिक्रिया से मुझे बहुत फायदा होता है, मेरी सहनशक्ति और निखरती है। आपके अपने विचार हैं, आपने प्रकट कर दिए। मेरा अपना निर्णय है कि मुझे धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। मैं आप पर गुस्सा करता तो नुकसान आपका नहीं, मेरा ही होता। जब कोई हमारी बुराई करता है, तब हमारे धैर्य की असली परीक्षा होती है। बुरी बातों को सहन करने की शक्ति हमें कई समस्याओं से बचा लेती है।

## सहारा छोड़ खड़ी हुई जिंदगी

सहेन्द्र बिहार के रोहतास जिले का रहने वाला है और दाएं पैर से निःशक्त था। बचपन से उसकी विज्ञान विषय में बहुत रुचि थी और वह इंजीनियर बनना चाहता था लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। हाई स्कूल पास करते ही उसके सिर से मां का साया उठ गया।

घर की स्थिति बहुत खराब हुई और सहेन्द्र का इंजीनियर बनने का सपना भी टूट गया लेकिन फिर भी उसने हालात के आगे घुटने नहीं टेके और विषम परिस्थितियों के बावजूद भी बीएससी नॉन मेडिकल कर लिया।

फिर उसे सहारा मिला नारायण सेवा संस्थान का जहां आकर उसके पांव का ऑपरेशन हो गया सहेंद्र चाहता है कि जिस तरह नारायण सेवा संस्थान लोगों में खुशियों की सौगात बांट रहा है, उसी तरह वह भी अपने जीवन में इस मुहिम को आगे बढ़ाएगा। वह खुद इंजीनियर नहीं बन पाया लेकिन किसी और के सपनों को साकार करने में जरूर सहयोगी बनेगा और जरूरतमंद छात्रों को निशुल्क कोचिंग करवाकर उनकी सहायता करेगा।

## प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

तेरा मंगल, मेरा मंगल, जग का मंगल होय रे। हाँ, महाराज, मंगलाचरण किया। मंगल आचरण ऐसा कोई कार्य हमारे से न हो जिसमें अन्य का अहित होता हो। ऐसी हरि की कथा, श्रीमद् भागवत महापुराण का अमृतम् की वर्षा। और श्री रामचरित मानस हुलसी के बेटे तुलसीदास जी महाराज के द्वारा रचित रामचरित मानस एवं राष्ट्रकवि मैथिलिशरण गुप्त जी, चिरगाँव झांसी वाले, अग्रसेनजी महाराज के वंशानुगामी उनके साकेत में पिछले दिनों में अर्पण स्व का स्वाध्याय। कहते हैं– स्वाध्याय क्या है? स्व का अध्ययनम् कैसे आये थे? हम क्यों आये है? हमें परमात्मा ने क्यों सहस्त्रारार्थ चक्र दिया है। क्यों हमारे को अनाहत चक्र का हृदय दिया है। ये 38 बार धड़कने वाला हृदय दिया है। इसका हम सद् उपयोग करें। ये कौतुहल का विषय नहीं है। ये तो भगवान ने बना दिया, परमात्मा ने बना दिया। धर्म कभी भी कौतुहल का विषय नहीं होता है– बन्धुओं।

सबसे पहले तो मैं आपको नमन् करूं। माताओं को, बहनों को, धर्मपरायण बन्धुओं को। ये व्यवहार की कथा, ये प्रातःकाल उठकर के रात्रि को निन्द्रा देवी की गोद में जाने तक कैसा हमारा प्रेम रहे? कैसा हमारा स्नेह– भाव रहे? कैसा वात्सल्य रहे? मुझे भी कैसी सेवा भावना रहे? हाँ, कई कहानियों के माध्यम से, कई दोहों के माध्यम से और रामचरित मानस की .पा और साकेत की .पा से। पहुँचे वहाँ विकार रहित। भगवान श्रीराम विकार रहित। कोई विकार नहीं, विकार क्या होता है? कोई कहेंगे– महाराज हमें तो इतनी ऊँची हिन्दी नहीं आती। ये क्रोध आना, लालच बहुत बढ़ जाना, ये आलस्य बहुत आ जाना। ये पापों का दलदल है, और ये विकारों का समूह है उसको मिलाकर विकार बोलते हैं। विकार रहित पार ब्रह्म परमात्मा, मर्यादा पुरुषोत्तम विकार रहित। ये तुलसी जी का पौधा, विकार रहित। इतना छोटा सा पौधा, और इसमें फूल आ रहे हैं, तुलसी माताजी के। अक्षत, हाँ सर्वाभावे अक्षतं समर्पयामी की कथा।

## सम्पादकीय

एक संत कवि की पंक्ति है – 'करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान। यानी अभ्यास के द्वारा कोई भी अपने स्वरूप का परिवर्तन कर सकता है। अपात्र या अयोग्य व्यक्ति भी सुपात्र या सुयोग्य बन सकता है।यों तो हरके व्यक्ति में अनेक अच्छाइयां होती ही है। तथा कमियों की भी कमियाँ नही है। प्रश्न यह है कि व्यक्ति अपनी अच्छाई का बखान तो करता रहता है। पर स्वयं की कमी को स्वीकार नहीं कर पाता । यह मानवीय कमजोरी है। जो अपनी कमजोरी या कमी को नहीं देख पाता उसमें सुधार की गुंजाइश क्षीण हो जाती है किसी भी व्यक्ति को स्वयं को सुधारना हो, समाजोपयोगी व मानवोचित बनाना हो तो सर्वप्रथम तो को उसे अपनी कमियों को पहचानना होगा। उसके बाद उन कमियों का विश्लेषण करके उन्हें त्यागने का मन बनाना होगा। फिर प्रांरभ होता है अभ्यास से अच्छाइयों का अंगीकरण। यह कार्य भले दुष्कर है पर अभ्यास से हर फल की प्राप्ति संभव है। अभ्यास वह क्रिया है जो परिमार्जन करती ही है।

## कुछ काव्यमय

जो जागा है
वह मंजिल को पायेगा।
जिसने खुद को परखा है
वो देर–सवेर
सफलता पथ पर बढ़ जायेगा।
बस भावों में बसालें
बढ़ने की भावना।
खुल जायेंगी सारी संभावना।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

# अच्छे काम करते रहें

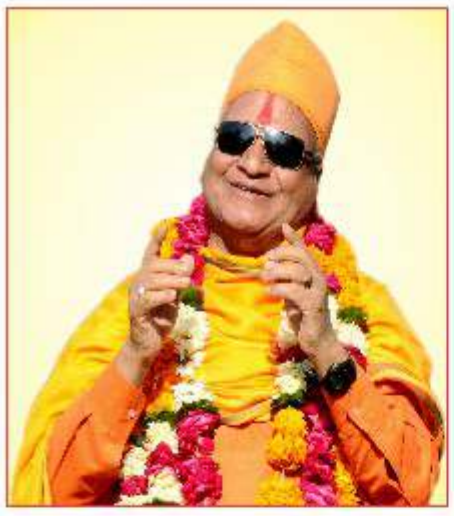



जाबालि ऋषि को एक बार क्रोध आ गया। एक कबूतर ने बीट कर दिया। जाबालि ऋषि ने गुस्सा किया। उनकी तपस्या भंग हो गई। कबूतर एक दम नीचे आकर के गिर पड़े और आकाशवाणी हुई थी। जाबालि ऋषि जा पतिव्रता स्त्री को अपना गुरु बना। और उन्होंने तभी एक घर के बाहर जाकर के आवाज दी।

जल्दी आओ मैं सिद्ध योगी जाबालि आया हूँ। अन्दर से गृह स्वामिनी ने कहा। मैं अपने पति को भोजन करवा रही हूँ। मैं अपने बच्चे को विद्या अध्ययन करवा रही हूँ। मैं अपने ससुर जी की सेवा कर रही हूँ। मैं अपनी सासू जी को दवाई दे रही हूँ। थोड़ी देर आप ठहरिये–बिराजिये। मैं आपका स्वागत भी करुंगी। उन्होंने कहा अरे ! तुझे नही मालूम मैं सिद्ध जाबालि आया हूँ। अन्दर से गृहस्वामिनी ने कहा। आप गुस्सा क्यों करते हो? मैं कोई कबूतरी नहीं हूँ जो आपके गुस्से से जलकर भस्म हो जाऊंगी। अभी थोड़ी देर रुकिये। ये कर्त्तव्य धर्म को अपने धर्म को अपनाईये। और हे! पति देवता आप अपनी पत्नी के साथ दगा मत कीजिए। चरित्र को खराब मत कीजिए।

**कनक कनक ते सौ गुनी,**
**मादकता अधिकाय।**
**ये खाये बौरात जग,**
**वो पाये बौरात।।**

धन के लोभ में इतने घमण्डी मत हो जाइये कि आलू बड़ा, मक्खन बड़ा, आप बड़ा मत होइये। आईये, भारत माता को प्रणाम कीजिए। आईये सत्य को प्रणाम कीजिए। मेरे पूज्य बापू जी ने 6 साल की उम्र में बताया ''बेटा अपने माथे को शान्त रखना।

**–कैलाश 'मानव'**

# जो आया है वो जायेगा...

आप और हम सब जानते हैं भगवान बुद्ध को कैसे पता लगा था कि जीवन का सत्य क्या है? जीवन का सत्य है जन्म और मृत्यु। सबसे पहले बालपन, फिर जवानी और बुढ़ापा। ये जीवन तीन घंटे का पेपर है, हम बुढ़ापे में सोचते है पेपर कैसा किया हमने जब हमारे पास कुछ रहता नहीं। जिन्दगी का कड़वा सच बताने जा रहा हूँ मैं आपको। एक भिखारी था, वह न ठीक से खाता था, न पीता था। जिस वजह से उसका बूढ़ा शरीर सूख कर काँटे की तरह हो गया। उसकी एक–एक हड्डी गिनी जा सकती थी। उसके आँखों की ज्योति चली गई, बेचारा रास्ते में बैठकर गिड़–गिड़ा कर भीख माँगा करता था। एक युवक उस रास्ते से रोज निकलता था। भिखारी को देखकर उसे लगता कि इसे इतनी तकलीफ में यह व्यक्ति भीख माँगता है। तो भगवान इसे उठा क्यों नहीं लेता। एक दिन उसे रहा न गया। वह भिखारी के पास गया और बोला– बाबा तुम्हारी हालत बहुत दयनीय है। तुम फिर भी जीना चाहते हो। तुम भीख माँगते हो, फिर ईश्वर से यह प्रार्थना क्यों नहीं करते कि वह तुम्हें अपने पास बुला लें। तुम बहुत तकलीफ में हो। भिखारी ने मुँह खोला– भईया जो तुम कह रहे हो वही बात मेरे मन में भी कई बार उठती है। मैं भगवान से बराबर प्रार्थना करता हूँ पर वो मेरी सुनता ही नहीं। शायद वो चाहता है कि मैं इस धरती पर रहूँ। जिससे दुनिया के लोग मुझे देखे और समझे की एक दिन मैं भी उन्ही की तरह था। लेकिन वह दिन भी आयेगा जब वो मेरी तरह हो जायेंगे। इसलिये किसी को घमण्ड नहीं करना चाहिये। लड़का भिखारी की ओर देखता रह गया। उसने जो कहा था उसमें कितनी बड़ी सच्चाई समायी हुई थी। जिन्दगी का एक कड़वा सच है जिसे मानने वाले लोग ही प्रभु की सीख को समझ पाते हैं। जो आया है वो जायेगा। किस लिये इतना धनसंग्रह करें? किस लिये इतना परिग्रह करें? अपरिग्रह कीजिये। ज्यादा अपने पास धन का संग्रह मत कीजिये क्योंकि जाना है बिना कुछ लिये दिये। इसलिये लेना है और देना है तो प्रेम, स्नेह और आत्मीयता लीजिये और दीजिये, उसी में आनन्द है।

**– सेवक प्रशान्त भैया**

# एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

शीघ्र ही सब लोग यमुनोत्री पहुँच गये। कैलाश ने गर्म पानी के स्रोतों के बारे में बहुत सुना था, इनमें चावल पकाना आम बात है। वह भी अपने साथ चावल की पोटली लेकर आया था और अपनी आंखों से प्रकृति के इस अद्भुत कारनामे को देखना चाहता था। एक जगह यमुनोत्री का 20 फुट चौड़ा पाट था, यहीं गर्म पानी का एक कुण्ड था। यहां पर पण्डित बैठे थे, सभी अपनी अपनी चावल की पोटलियां इसी पंडित को देते हैं जो कुण्ड के पानी में उन्हें लटका देता है। कैलाश ने भी यही किया ओर एक तरफ किनारे पर बैठ गया। 15 मिनट में चावल पक कर तैयार हो गये तो सबने भगवान के प्रसाद स्वरूप इन्हें ग्रहण किये।

यहां उसकी भगवद्कथा करने की इच्छा हो गई। साधन सब साथ थे ही। कुछ लोगों को एकत्र कर कथा शुरु की तो देखते ही देखते श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। कैलाश को इस अनुभव से अत्यन्त शान्ति मिली। लौट कर वापस उत्तरकाशी आ गये। यहां से वापस गंगोत्री चढ़े। गाड़ियों के लिये स्थानीय ड्राइवर ले लिये थे। इन्हे पहाड़ी रास्तों में गाड़ी चलाने का अनुभव होता है इसलिये खतरनाक रास्तों में भी चिन्ता नहीं रहती। एक तरफ गहरी खाई दूसरी तरफ ऊंचे ऊंचे पहाड़, बीच में सड़क। मैदानी क्षेत्रों के ड्राइवरों को लगभग सभी यात्री नीचे ही छोड़ देते हैं।

गंगोत्री पहुँच कर दर्शन किये। यहां भी उसे पहचानने वाले ढ़ेर सारे लोग मिल गये, वो किसी को नहीं जानता था फिर भी सबसे इस तरह मिला जैसे बरसों से जान पहचान हो। यहीं उसके परिवार की चार पीढ़ियों का बही खाता लेकर पण्डे भी आ गये। उसके दादाजी के हस्ताक्षर उन बही खातों में थे। जब उसे यह पता चला कि गंगोत्री का मन्दिर राजस्थान सरकार के प्रशासन के अर्न्तगत है तो उसके अचरज की कोई सीमा नहीं थी। **अंश - 210**

# समय की कमी का बहाना छोड़ें

अमरीका के सुप्रसिद्ध गणितज्ञ चार्ल्स फेफर्मन रोज केवल एक घंटा गणित सीखने का नियम पालते थे और इस नियम पर अंत तक डटे रहकर उन्होंने गणित में महारत हासिल कर ली। ईश्वर चंद्र विद्यासागर जब कॉलेज जाते थे, तो रास्ते में दुकानदार उन्हें देखकर अपनी घड़ियां ठीक करते थे।

वे जानते थे कि विद्यासागर समय से कभी एक मिनट भी आगे–पीछे नहीं चलते। नेपोलियन ने ऑस्ट्रिया को इसलिए हरा दिया था क्योंकि वहां के सैनिक उनका सामना करने के लिए पांच मिनट देरी से आए थे और वही नेपोलियन वॉटर–लू के युद्ध में इसलिए बंदी बना लिए गए थे क्योंकि उनके सेनापति भी मात्र पांच मिनट देरी से आए थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी दातुन करने से पूर्व शीशे पर श्रीभगवदगीता का एक श्लोक चिपका लिया करते थे और दातुन करते समय ही उसे याद कर लिया करते थे।

समय का सदुपयोग करते हुए उन्होंने गीता के कुल तेरह अध्यायों को कंठस्थ याद कर लिया था। यदि आप स्टूडेंट हैं, तो परीक्षा का यह समय महत्वपूर्ण रहने वाला है, प्रातः जल्दी उठकर दिन की सार्थक शुरुआत करें। मंजिल को हासिल करने वाले कभी देर तक सोया नहीं करते। वे आगे बढ़ते रहते हैं।